नयी लिपि व्यवहार निर्देशिका

नयी लिपि के इस्तेमाल के नियम इन बातों को आधार बनाकर रखा गया कि:–

1) नयी लिपि में लेखन आसान होगा
2) नयी लिपि में लेखन वैज्ञानिक और शुद्ध होगा
3) नयी लिपि ध्वनि–आधारित होगा
4) नयी लिपि जन–साध्य होगा

नयी लिपि के अक्षर इसप्रकार होंगे

अक्षर

A	आ
Ã	ऐ
Ä	ऍ ऐ
B	ब
B́	भ
C	च
Ć	छ
D	द
D́	ध
Ḑ	ड
Ḓ	ढ
E	ए
Ĕ	अ
F	फ़
G	ग
Ǵ	घ
Ğ	ग़
H	ह
I	इ/ई
J	ज
J́	झ
K	क
Ḱ	ख
L	ल
Ĺ	ल्ह
Ļ	ळ
Ḽ	ळ्ह
Ł	ळ̱
M	म
Ḿ	म्ह
N	न

Ń	न्ह
Ņ	ण
Ṋ	ण्ह
N̆	ङ
Ñ	ञ
O	ओ
Õ	ऑ औ
P	प
Ṕ	फ
Q	क़
R	र
Ŕ	र्ह न्ह
Ŗ	ड़
R̭	ढ़
S	स
S̆	श
Ş	ष
T	त
T́	थ
Ţ	ट
Ṱ	ठ
U	उ
Ŭ	व
Ŭ́	व्ह
V	व
V́	व्ह
X	ख़
Y	य
Z	ज़
Z̆	ज़ (झ़)

नयी लिपि के बारे में दो शब्द

नयी लिपि में कुछ नयी बातें ऐसी हैं जो देवनागरी से कई गुना बेहतर साबित होती है जो कुछ इसप्रकार है। अब 'कांग्रेस' जैसे शब्दों में जहां आधा चंदा (या अर्धचन्द्राकार) और अनुस्वार (बिंदी) एक साथ नहीं आ सकते वहाँ अब इस लिपि के ज़रिए सही ढंग से लिखे जा सकेंगे यानि kõňgres (कांग्रेस), kõňkriţ (कांक्रीट) आदि। सामान्य 'ऐ' और खुला 'ऐ' में फ़र्क़ किया जायेगा। अरबी-फ़ारसी के व्यंजनों (कौन्सोनंट्स) अलग से महत्त्व दिया जायेगा। श और ष को एक अक्षर में मिला दिया गया है। एक समानता (यूनिफ़ॉर्मिटी) अक्षरों के ढाँचे में और उनके व्यवहार में रखा गया है। स्वरों (वॉवेल्स) में अलगाव और उनके वैशिष्ट्यों का व्यावहारिक तौर पर ध्यान रखा गया है। इसके अलावा हमने 'व' के दोनों उच्चारणों (प्रोनन्सियेशन) को भेद करने की कोशिश की है। तमिल (तमिऴ) का एक अक्षर और मराठी के दो अक्षर यहाँ युक्त किये गए। अल्प-प्राण और महाप्राण अक्षरें अलग किये गए।

ह्रस्व 'इ' – दीर्घ 'ई'

मेरे परीक्षणों के अनुसार देवनागरी में ह्रस्व इ और दीर्घ ई के व्यवहार और संभाल (मैनेजमेंट) असंगत (इन्कंसिस्टंट) लगने लगी है इसीलिए कुछ मुख्या बिंदु आपके सामने पेश करने जा रहा हूँ।

हिंदी में अब इ–यों का उच्चारण पढ़ते या बोलते समय समान लगने लगी हैं इसलिए इनमें भेद करना वस्तुतः अतार्किक हो गया है। बाक़ी हमारे पास जो बचता है वो है यह घटना – पीटना और पिटना। इन दोनों क्रियाओं को भेद करना आवश्यक है। इसीलिए हमने इसका विधान इस तरह किया है कि तब छोटी इ की मात्रा को i और बड़ी ई की मात्रा को î लिखा जाएगा।

पिटना को piţna और पीटना को pîţna लिखा जाएगा।

ह्रस्व उ – दीर्घ ऊ

इसी तरह बड़ी उ और छोटी ऊ के लिए हमने यही तरीक़ा अपनाया है, छोटी उ को u और बड़ी ऊ को û लिखा जाएगा। बशर्ते ये बात उन्हीं मामलों में कारगर हो जहाँ दोनों क्रियाओं को भेद करना आवश्यक हो जिनमें सुनने में बस (स्वर) की दीर्घता (खिंचाव, तान या लम्बाई) के आधार पर फ़र्क़ हो।

लुटना को luţna और लूटना को lûţna लिखा जाएगा।

संयुक्ताक्षरों से परहेज़ करना

लातिन लिपि एक आक्षरिक (अल्फ़ाबेटिक) लिपि होने के कारण किन्हीं नियमों के आधारिक संयुक्त अक्षरों के निर्माण करने की आवश्यकता नहीं होगी।

उर्दू उच्चारणों को समझाने का सही तरीक़ा

दुःख की बात है की उर्दू उच्चारणों के मामले में हिंदी – भाषी लोग वर्तनी (स्पेलिंग) का ध्यान बिलकुल नहीं रखते जो बहुत ज़रूरी है। भारत में सरकारी दस्तावेज़ में यह त्रुटि बिलकुल दर्शनीय है। यह स्थिति अत्यंत दयनीय है। इसका मुख्य कारण ख़ुद देवनागरी लिपि को ही माना जाना चाहिए। एक बिंदु का फ़र्क़ भी अगर लोग सही तरीक़े से करना नहीं जानेंगे तो ऐसी हिंदी के सीखने का क्या मतलब, क्या औचित्य।

काग़ज़ – kağĕz

फ़ख़्र – fĕxr

मुल्ज़िम – mulzim

ज़्यादा – zyada

क़ातिल – qatil

क़यामत – qĕyamĕt

क़िस्मत – qismĕt

इजाज़त – ijazĕt

महाप्राण और मूर्धन्य व्यंजनों का नियमितिकरण

हमने सामान्य महाप्राणों (अस्पाईरेटेड) व्यंजनों पर टेढ़ी लकीर का निशान, सामान्य मूर्धन्यों (रिट्रोफ़्लेक्स) के नीचे झूलता अंगुड़ा का निशान और इन दोनों के समिश्रण वालों में छप्पर का निशान निर्धारित है।

सामान्य ऐ और खुल्ला ऍ

हिंदी में ऐ के दो उच्चारण हैं, एक सामान्य ऐ जो आम तौर पर ऐ के लिए इस्तेमाल होता है, इसे हम ã लिखेंगे और खुल्ला ऍ जो विदेशी शब्दों का हिन्दीकृत उच्चारणों में इस्तेमाल होता है इसे ä लिखेंगे।

न के चार रूप

'न' के लिए हिंदी में चार ध्वनियाँ हैं और वे अलग अलग क़िस्म के वर्णों से पहले जुड़ने ने अलग अलग सुनाई देती हैं।

कंठ्य (क–वर्ग; क, ख, ग, घ) व्यंजनों के आगे	ň
तालव्य (च–वर्ग; च, छ, ज, झ) व्यंजनों के आगे	ñ
मूर्धन्य (ट–वर्ग; ट, ठ, ड, ढ) व्यंजनों के आगे	ņ
और दंत्य (त–वर्ग; त, थ, द, ध) व्यंजनों के आगे	n

रहेगा।

बहरहाल "तिनका, धुनकी, मनका" जैसे शब्दों में n की ध्वनि स्पष्ट होने के कारण कोई विशेष वर्ण की आवश्यकता नहीं है।

ओगोनेक – चन्द्रबिन्दु का लातिनी समकक्ष (काउंटरपार्ट)

हिंदी में यदि कोई ऐसा मुनासिब (उपयुक्त) चिह्न मिल सकता है जो चन्द्रबिन्दु का काम कर सके, और चन्द्रबिन्दु के कार्यतः ज़्यादा उत्तम सिद्ध हो सके तो वो है ओगोनेक चिह्न जिसे पोलैंडीय भाषा में इसी काम से इस्तेमाल किया जाता है। ये हर हालत में किसी भी वक़्त काम में लगाया जा सकता है।

Ą	आँ
Ą̃	ऐं
Ą̈	ऐं
Ę	एँ
Ę̆	अँ
Į	इँ ईं
Į̂	ईं
Ǫ	ओं
Ǫ̃	औं
Ų	उँ ऊँ
Ų̂	ऊँ

ध्यान दें:– इन वर्णों को मूल वर्ण व्यवस्था के साथ गिनती में न जोड़ें।

ए की ध्वनि – विशेष निरीक्षण

कभी कभार हम यह देखते हैं की कुछ विशेष क़िस्म के शब्दों में अगर देवनागरी में 'अ' ध्वनि आए और उसके तुरंत बाद ही 'ह' की ध्वनि आये तो 'अ' की ध्वनि 'ए' जैसी सुनाई देती है। ये बोलचाल की प्रकृति के आधार पर लहजे के दृष्टिकोण से लाज़मी (पुष्ट) है।

जैसे पहला, ज़हर आदि। इनमें ‘ह’ के आगे आने वाले ‘अ’ की ध्वनि को नयी लिपि में e वर्ण का दर्जा दिया जाए। तहरान, सहर, शहर आदि इनके अन्य उदाहरण हैं।

अरबी इज़ाफ़त

अरबी फ़ारसी भाषा के इज़ाफ़त को निर्देश करने के लिए आप इस प्रारूप (अं: “शीम”) का अनुसरण कर सकते हैं।

dastan-e mohõbbĕt

biradĕr-e mĕn

संस्कृत शब्दों के हिन्द्वीकरण के लिए विशेष नियम जो हमने नीतिगत तौर पर अपनाए हैं

हमने हिंदी के शब्दों में आने वाले संस्कृत शब्दों में उच्चारण के हिसाब से होने वाले परिवातनों के मद्देनज़र कुछ विशिष्ट नियम बनाए हैं जिनका कठोरता के साथ पालन करना अत्यंत आवश्यक है।

1) श, ष इन दोनों को **हिंदी लातिन** में लिखते समय केवल s̆ से ही दोनों को संबोधित किया जाए। संस्कृत उक्तियों के अनुलिपिकरण की आवश्यकता पड़ने पर अतिरिक्तता में ş का उपयोग ‘ष’ के लिए करें।

2) हिंदी भाषा की विशेषता ‘व’ वर्ण का अपना निजस्व उच्चारण का ढंग है। प्रायः ‘उअ’ के उच्चारण वाले आम ‘व’ को ŭ समझायें। संस्कृत भाषा में उच्चारित मूल ‘व’ को v समझायें।

3) विसर्ग के उच्चारण में ‘ : ’ का उच्चारण संस्कृत उक्तियों के अनुलिपिकरण में ḣ किया जायेगा।

एक नए वर्ण का प्रयोजन किया गया

उर्दू शब्दों में मूलतः और अन्य भारोपीय भाषाओं में व्यवहृत अतिघर्षित ‘ज़’ यानि उर्दू ‘ژ’ या फ्रेंच ‘j’ के लिए ख़ासतौर से एक नया वर्ण ž अब अभियोजित किया जा चुका है। इससे ‘रिपोर्ताज़’ जैसे शब्दों में व्यवहृत यह विशेष ‘ज़’ का सही उच्चाराणाधारित समकक्ष प्राप्त हो सकेगा।

आख़िरी बात

सिन्धी भाषियों अगर आप अपने विशेष व्यंजनों को कहीं अपने लेख में दर्शाना चाहते हैं तो अपने उन चार विशेष व्यंजनों के ऊपर ‘ ˜ ’ चिह्न प्रदर्शित करें। और व्यंजन ‘ब॒’ के लिए ‘w’ व्यंजन अभियोजित किया जा चुका है।

कश्मीरी भाषियों अगर आप ‘च़’ को अपने लेखों में दर्शाना चाहते हैं या कोई व्यक्ति जापानी वर्ण ‘त्स’ का उच्चारण प्रदर्शित करना चाहते हैं तो वह ç और ç̣ (इसके महाप्राण संस्करण) का इस्तेमाल करें।

कुछ अक्षरों के क्षेत्रीय रूपांतरण और उनके लिखने का उच्चारण–आधारित विधि (एक नमूना)

अक्षर	हिंदी	बंगाली	मराठी	संस्कृत	कुछ और
क्ष	kšĕ	(k)ḱõ	kšĕ	kşĕ	इसी प्रकार अन्य भाषाओँ में विशिष्ट अक्षरों को रूपांतरित किया जा सकता है। *-(g)gǭ वैकल्पिक
ज्ञ	gyĕ	(g)gõ*	dnyĕ	jñĕ	
त्स	tsĕ	tsõ	tsĕ	tsĕ	
त्म	tmĕ	ttõ	tmĕ	tmĕ	
हृ	hri	ri	hru	hr̥	
स्म	smĕ	(š)šõ	smĕ	smĕ	
श्म	šmĕ	(š)šõ	šmĕ	şmĕ	
पृ	pri	pri	pru	pr̥	

नमूना लेख (हिंदी)

प्रतिज्ञा (हिंदी में)
Prĕtigya (Hindi męٖ)

Ḃarĕt (mera) hĕmara deš hã. Hĕm sĕb Ḃaretvasi ḃai-behen hą̃. (Muʝe) hemę ĕpna deš praņǫ se ḃi pyara hã. Iski sĕmridđi evĕm viviđ sĕnskriti pĕr (muʝe) hĕmę gĕrv hã.

(Mą̃) hĕm is (ka/ki) ke suyogyĕ eđikari bĕnne ka prĕyetnĕ sĕda (kĕrta rĕhųga/ kĕrti rĕhųgi) kĕrte rĕhęge. (Mą̃) hĕm ĕpne mata-pita, šikšekǫ evĕm gurujĕnǫ ka sĕda adĕr (kĕrųga/kĕrųgi) kĕręge õr sĕbke saṫ šišţta ka vyĕvhar (kĕrųga/kĕrųgi) kĕręge.

(Mą̃) hĕm sĕb (ya sĕɓi) jivǫ (janŭĕrǫ õr peŗ põɗǫ) pĕr dĕya (kĕrųga/kĕrųgi) kĕręge.

(Mą̃) hĕm ĕpne deš õr dešvasiyǫ ke prĕti ŭĕfadar rehne ki prĕtigya (kĕrta/kĕrti hų) kĕrte hą̃ õr unke kĕlyaŋ evĕm suḱ-sĕmriddi mę hi (mera) hĕmara suḱ nihit hã.

Jĕy hindı

समाप्तिः Sĕmaptiḣ

***